17 फरवरी 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विद्वत्संगोष्ठी सानन्द संपन्न

कारंजा-वाशिम (महा.) : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकपूर्ति महोत्सव समिति के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 3 फरवरी तक एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. सुजाता ताई रोटे कुम्भोज बाहुबली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

यह संगोष्ठी पाँच सत्रों में आयोजित की गई। दिनांक 1 फरवरी को प्रात:काल प्रथम सत्र '**अनेकान्त-स्याद्वाद एवं निमित्त-नैमित्तिक संबंध**' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई व पण्डित शुभमजी जैन द्रोणगिरि ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित अनुभवजी शास्त्री पुणे एवं संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री भोपाल ने किया। दोपहर में द्वितीय सत्र '**क्रमनियमितपर्याय या क्रमबद्धपर्याय**' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित गौरवजी उखलकर कारंजा, पण्डित अमनजी जैन दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित सुलभजी जैन झांसी एवं संचालन विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली ने किया।

दिनांक 2 फरवरी को प्रात:काल तृतीय सत्र '**अधिगम के उपायभूत निश्चय-व्यवहारनय**' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली उपस्थित थे। गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सिंगापुर में अपूर्व धर्मप्रभावना

सिंगापुर : यहाँ शांतिनाथ जिनालय में दिनांक 1 से 8 फरवरी तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: प्रक्षाल पूजन के पश्चात प्रवचनसार ग्रंथ की संपूर्ण गाथाओं (गाथा 1 से 275) का सरल व संक्षिप्त शैली में मर्म समझाया गया। सायंकाल समयसार ग्रंथ की गाथा 1 से 25, नंदीश्वर द्वीप, कालचक्र, जीवन की दुर्लभता आदि अनेक विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

दिनांक 3 फरवरी को भगवान आदिनाथ निर्वाण दिवस के अवसर पर विशेष रूप से निर्वाण लाडू चढाया गया तथा सामूहिक भक्तामर पाठ के उपरांत संक्षेप में भक्तामर स्तोत्र के मर्म की चर्चा हुई। साथ ही इस दिन 'आर्ट ऑफ लिविंग' विषय पर सरस शैली में व्याख्यान का लाभ मिला।

SJRS (सिंगापुर जैन रिलीजियस सोसायटी) द्वारा जालान यासीन के हॉल में जैन भूगोल विषय पर सेमिनार का आयोजन भी हुआ।

संपूर्ण आयोजन श्रीमती आरती-अशोकजी पाटनी के कुशल नेतृत्व में श्री सचिन जैन, साकेत जैन, नयन जैन, आशीष जैन एवं विक्रम जैन के सहयोग से संपन्न हुये। **- रितिका पाटनी**

सिंगापुर आयोजन की झलकियाँ

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

23

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आचार्य योगीन्दुदेव कृत परमात्मप्रकाश की १९०वीं गाथा में परम समाधि की व्याख्या करते हुए ऐसा कहा है कि – ''समस्त विकल्पों के नाश होने को परम समाधि कहते हैं।''

इसे ही ध्यान के प्रकरण में ऐसा कहा है कि ''ध्येय और ध्याता का एकीकरणरूप समरसीभाव ही समाधि है।''

स्याद्वाद मंजरी की टीका में योग और समाधि में अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है – ''बाह्यजल्प और अन्तर्जल्प के त्यागरूप तो योग है तथा स्वरूप में चित्त का निरोध करना समाधि है।''

इसप्रकार जहाँ भी आगम में समाधि के स्वरूप की चर्चा आई है, उसे जीवन साधना आत्मा की आराधना और ध्यान आदि निर्विकल्प भावों से ही जोड़ा है। अतः समाधि के लिए मरण की प्रतीक्षा करने के बजाय जीवन को निष्कषाय भाव से, समतापूर्वक, अतीन्द्रिय आत्मानुभूति के साथ जीना जरूरी है। जो सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा के आश्रय से ही संभव है।

तत्त्वज्ञान के अभ्यास के बल पर जिनके जीवन में ऐसी समाधि होगी, उनका मरण भी नियम से समाधिपूर्वक ही होगा। एतदर्थ हमें अपने जीवन में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का अध्ययन और उन्हीं की भावनाओं को बारम्बार नचाना, उनकी बारम्बार चिन्तन करना – अनुप्रेक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है। तभी हम राग-द्वेष से मुक्त होकर निष्कषाय अवस्था को प्राप्त कर सकेंगे। जिन्होंने अपना जीवन समाधिपूर्वक जिया हो, मरण भी उन्हीं का समाधिपूर्वक होता है। वस्तुतः आधि-व्याधि व उपाधि से रहित आत्मा के निर्मल परिणामों का नाम ही समाधि है।

पर ध्यान रहे, जिसने अपना जीवन रो-रोकर जिया हो, जिनको जीवनभर संक्लेश और अशान्ति रही हो, जिनका जीवन केवल आकुलता में ही हाय-हाय करते बीता हो, जिसने जीवन में कभी निराकुलता का अनुभव ही न किया हो, जिन्हें जीवनभर मुख्यरूप से आर्तध्यान व रौद्रध्यान ही रहा हो; उनका मरण कभी नहीं सुधर सकता; क्योंकि ''जैसी मति वैसी गति।''

आगम के अनुसार जिसका आयुबंध जिसप्रकार के संक्लेश या विशुद्ध परिणामों में होता है, उसका मरण भी वैसे ही परिणामों में होता है। अतः यहाँ ऐसा कहा जायगा कि ''जैसी गति वैसी मति''।

जब तक आयुबंध नहीं हुआ तबतक मति अनुसार गति बंधती है और अगले भव की आयुबंध होने पर 'गति के अनुसार मति' होती है। अतः यदि कुगति में जाना पसंद न हो तो मति को सुमति बनाना एवं व्यवस्थित करना आवश्यक है, कुमति कुगति का कारण बनती है और सुमति से सुगति की प्राप्ति होती है।

जिन्हें सन्यास व समाधि की भावना होती है, निश्चित ही उन्हें शुभ आयु एवं शुभगति का ही बंध हुआ है या होनेवाला है। अन्यथा उनके ऐसे उत्तम विचार ही नहीं होते।

कहा भी है –

तादृशी जायते बुद्धि, व्यवसायोऽपि तादृशः।
सहायस्तादृशाः सन्ति, यादृशी भवितव्यता।।

बुद्धि, व्यवसाय और सहायक कारण कलाप सभी समवाय एक होनहार का ही अनुशरण करते हैं। मोही जीवों को तो मृत्यु इष्टवियोग का कारण होने से दुःखद ही अनुभव होती है। भला मोही जीव इस अन्तहीन वियोग की निमित्तभूत दुःखद मृत्यु को महोत्सव का रूप कैसे दे सकते हैं? नहीं दे सकते।

अतः हमें मरण सुधारने के बजाय जीवन सुधारने का प्रयत्न करना होगा। **(क्रमशः)**

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ कहान नगर में दिनांक 25 से 27 जनवरी तक वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में सागर, बण्डा, द्रोणगिरि, शाहगढ, अमरमऊ, कर्रापुर, खड़ैरी, बकस्वाहा, मकरोनिया आदि अनेक स्थानों से सैंकड़ों साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। स्थानीय विद्वानों द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में डॉ.मनोजजी जबलपुर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ द्वारा संपन्न कराये गये।

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें 27 जनवरी 2019 को संपन्न हो चुकी हैं। सम्बन्धित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री परीक्षा बोर्ड कार्यालय जयपुर को भिजवाने का कष्ट करें, ताकि परीक्षा परिणाम व प्रमाण-पत्र जैसे कार्य प्रभावित नहीं हों।

– नीशू शास्त्री (प्रबन्धक-परीक्षा विभाग) 7742364541

पू. श्री कुंद कुंद कहान धर्मरत्न पं. श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

Chaitanya Vidhyaniketan
ज्ञान सर्व समाधान कारणं
एक कदम स्वाध्याय की ओर
Chaitanyadham Ahmedabad, Gujarat

चैतन्यधाम–अहमदाबाद

चैतन्य विद्या निकेतन

सौजन्य :- चेतनाबेन सुभाषचंद्र कोटडीया - वापी

घर घर शिक्षा घर-घर ज्ञान
चैतन्यधाम का यह अभियान

अपूर्व अवसर
प्रतिभाशाली बालकों के लिए कक्षा 8 वी से 12 तक अंग्रेजी एवं गुजराती माध्यम में प्रवेश

प्रतिभा पात्रता
प्रथम श्रेणी में 7 वीं कक्षा में 70% से अधिक प्राप्तांक एवं जैन धर्म के संस्कारो में अभिरुचि

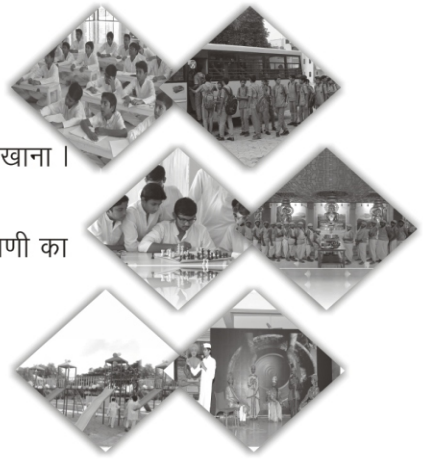

उद्देश्य

★ छात्रो को लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक, नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देना ।
★ बालको को वर्तमान समयानुसार प्रत्येक क्षेत्र मे पारंगत करना ।
★ देवदर्शन, पूजन, भक्ति, स्वाध्याय, गोष्ठीयाँ आदि से संस्कारित जीवन जीने की कला सिखाना ।
★ अनादिकालीन तीर्थंकरो, गणधरों, आचार्यो, मुनिराजो की परंपरा से अवगत कराना ।
★ गुजराति भाषा का अध्ययन कराकर प.पू. श्री कानजी स्वामी द्वारा बताई गई वीतराग वाणी का अध्ययन कराना ।

सुविधाएं

➡ आवास, भोजन एवं विद्यालय आवागमन निःशुल्क ।
➡ विद्यालय के अतिरिक्त विद्या निकेतन मे भी अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत आदि भाषाओ की शिक्षा
➡ व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, कम्प्युटर, खेलकूद, संगीत, योगा, सांस्कृतिक, धार्मिक गोष्ठीयॉ, भ्रमण एवं केम्प का आयोजन

शीघ्रता करे

फार्म भरने की अंतिम तिथि 10 मार्च 2019
साक्षात्कार शिविर 6 अप्रैल से 8 अप्रैल 2019 तक

फार्म प्राप्त करने के लिए - Log In करें ।
www.chaitanyadham.com
Email: chaitanyadham@gmail.com

संपर्क सुत्र

पं. श्री सचिन भरडा शास्त्री	99242 81114 / 94092 74126 / 39
मंत्री श्री राजुभाई वाडीलाल शाह	98250 30606
मंत्री श्री प्रतिक भाई चन्द्रकांत शाह	98250 39266

भारतनुं गौरववंतु तिर्थ स्थान
"चैतन्य धाम"
"Chaitanyadham" On National Highway No. 48, At & Post. Dhanap
Ta.Dist. Gandhinagar, Ahmedabad. (Guj.) Mo. 94092 74139

53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, 5 जून 2019 तक

विशेष आकर्षण

इस शिविर में मुख्यरूप से पाठशालाओं में अध्यापन कराने वाले अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा, जिससे वे अपने नगरों में बालकों को वैज्ञानिक पद्धति से पढा सकेंगे।

साथ ही –

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं का भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कार्यक्रम स्थल :– दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत (गुज.)

संपर्क सूत्र –

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 **(राज.) फोन–0141–2705581, 2707458;**

Email - ptstjaipur@yahoo.com

आवास प्रमुख – धर्मेन्द्र शास्त्री (9724038436), अरुण शास्त्री (9377451008), सम्यक् जैन (9033325581)

असुविधा से बचने के लिये आवास फार्म भरकर हमें सूचित करें। आवास सुनिश्चित करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल है। वाट्सएप से भी आवास सुनिश्चित करवा सकते हैं। निम्न लिंक पर आवास फार्म प्राप्त कर सकते हैं –

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdkx5amU28jDTuOPdYpdofBbzudELq_OCpfJsGZbDSxx5q6lA/viewform

शिक्षार्थ सहायता योजना

ज्ञानोदय चैरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिये सैकण्डरी स्कूल तक शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करती है, आवेदन पत्र हेतु संपर्क करें – **GYANODAY CHARITABLE SOCIETY (Regd. No. 40194/2001)**

572, Asiad Village, New Delhi - 110049

Ph. 011-26493538 / 26492386 or 09811449431

www.gcsdelhi.org

(फार्म हमारी वेबसाईट से भी डाउनलोड कर सकते हैं)

शिक्षण शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र में श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 28 से 31 दिसम्बर 2018 तक श्री समयसार, प्रवचनसार, तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधानपूर्वक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. सुदीपजी शास्त्री, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, डॉ. अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री घेवरा मोड, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित संदीपजी शास्त्री घेवरा मोड, पण्डित सुरेन्द्रजी शास्त्री चंद्रविहार द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित संजीवजी उस्मानपुर, पण्डित नवीनजी शास्त्री घेवरामोड, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ द्वारा संपन्न हुये।

शोक समाचार

(1) मुम्बई निवासी श्री सुमेरचंद रामराव दोंडल का दिनांक 28 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. अरुणजी दोंडल के भाई थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100 रुपये प्राप्त हुए।

(2) जयपुर (राज.) निवासी श्री कैलाशचंदजी बैद (बडियाल वालों का) का दिनांक 20 जनवरी को आकस्मिक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 24 फरवरी	**जयपुर**	**वार्षिकोत्सव**
19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर,**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

दीक्षांत समारोह संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ नेहरु पुतला इतवारी स्थित महावीर विद्या निकेतन का दीक्षांत समारोह दिनांक 10 फरवरी को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुनीलजी नायक, हर्षा खक्कर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित मनोजजी जैन, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री व पण्डित विनीतजी शास्त्री उपस्थित थे। संस्था का परिचय श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के महामंत्री श्री अशोकजी जैन ने दिया।

इस अवसर पर 10वीं कक्षा के छात्र शाश्वत जोगी हराल को आदर्श विद्यार्थी चुना गया, जिसे डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल द्वारा स्वर्ण चेन व स्मृति चिह्न भेंटकर एवं कक्षा 8वीं के छात्र ओम संदीप गडेकर नागपुर को उप आदर्श विद्यार्थी चुना गया, जिसे रजत चेन व स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

सभा का संचालन पण्डित श्रीशांतजी शास्त्री, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री व पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

अग्रिम आमंत्रण

दिल्ली : यहाँ श्री सिद्धशिला परिसर, करण गली, विश्वास नगर में फाल्गुन अष्टाह्निका में दिनांक 13 से 22 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर आयोजित होने जा रहा है।

विद्वत्सान्निध्य – पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर।

प्रतिष्ठाचार्य – ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित संजयजी मंगलायतन, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी इन्दौर, पण्डित अनुभवजी जबलपुर, पण्डित विवेकजी दिल्ली।

सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र – वज्रसेन जैन (संयोजक), सुरेन्द्र जैन 'मिन्टू' (अध्यक्ष) 9818260976, मुरारीलाल जैन (उपाध्यक्ष), नीरज जैन (ट्रस्टी व महामंत्री) 9310860590, अतुल जैन (मंत्री) 9625030988

86 की उम्र में डॉक्टर ऑफ साइंस

सूरत (गुज.) निवासी **डॉ. धनकुमारजी जैन** ने 86 वर्ष की आयु में दिनांक 2 फरवरी को नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती कृत त्रिलोकसार ग्रंथ के गणित विषय पर **डॉक्टर ऑफ साइंस** की उपाधि (एकेडेमिक क्षेत्र में शोध की अंतिम उपाधि) प्राप्त की। आपने यह उपाधि त्रिलोकसार पर पण्डितप्रवर टोडरमलजी कृत ढूंढारी भाषाटीका पर '**मॉर्डन मैथेमेटिकल एनालिसिस ऑफ त्रिलोकसार**' विषय पर प्राप्त की।

ज्ञातव्य है कि आपने 2014 में 81 वर्ष की आयु में पण्डित टोडरमलजी कृत अर्थसंदृष्टि अधिकार पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी, जिसे गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त हुआ है।

आपकी इस उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

चलो सूरत! चलो सूरत!! चलो सूरत!!!

श्री वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019

के अवसर पर

विगत 41 वर्षों से कार्यरत जैन समाज का अग्रणीय संस्थान

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में

प्रवेश पाने का स्वर्णिम अवसर

योग्यता : किसी भी बोर्ड से दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण।

विशेषताएं

- डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल और पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सानिध्य में रहकर 5 वर्षों तक जैनदर्शन का तलस्पर्शी मर्म समझने का स्वर्णिम अवसर।
- मात्र 5 वर्ष में जैनधर्म के आधिकारिक विद्वान बनें।
- स्वयं स्वाध्याय कर आत्मकल्याण करें, समाज को आत्मकल्याणकारी धर्म के मार्ग पर लगायें।
- सरकारी मान्यता प्राप्त स्नातक डिग्री (''शास्त्री'' BA के समकक्ष)।
- आगे उच्च (सर्वोच्च) शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध।
- शिक्षण के क्षेत्र में सुनहरे अवसर।
- सम्पूर्ण 5 वर्ष तक आवास एवं भोजन नि:शुल्क।
- अब तक लगभग 800 स्नातक, सभी उच्च पदस्थ।
- विशाल शिक्षण संस्थानों के संचालन में रत।
  विश्वविद्यालय, कॉलेज और स्कूलों में प्रोफेसर, लेक्चरर और शिक्षक पदों पर कार्यरत।

तीर्थधाम आदीश्वरम् का वार्षिकोत्सव संपन्न

चंदेरी (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम आदीश्वरम् का 6वाँ वार्षिकोत्सव एवं भगवान ऋषभदेव का मोक्षकल्याणक दिनांक 3 फरवरी को उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित नरेशजी बारीवालों ने भक्तामर मंडल विधान संपन्न कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती शोभाजी हिरावल द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। महिलाओं द्वारा मंगल कलश की स्थापना की गई। शिखर पर ध्वजारोहण क्षेत्र के मंत्री श्री अजयजी बंसल ने किया। न्यास के अध्यक्ष श्री अखिलजी बंसल व श्री संदीपजी भारत अशोकनगर ने शांतिधारा की। संचालन व संयोजन श्री जयेन्द्रजी जैन 'निप्पू' ने किया। क्षेत्र के विकास हेतु 11 सदस्यीय कार्यकारिणी का मनोनयन किया गया।

– अखिल बंसल

खुशखबरी ! प्रवेश हेतु अवसर!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा में स्थित परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

आचार्य समन्तभद्र

द्वितीय सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

(सत्रारम्भ – सोमवार, 1 अप्रैल 2019)

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मुमुक्षु आश्रम कोटा स्थित **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** अपना प्रथम सत्र पूर्ण कर चुका है, जिसमें वर्तमान में 6 प्रांतों के 31 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्यानिकेतन का द्वितीय सत्र सोमवार, 1 अप्रैल 2019 से प्रारम्भ हो रहा है, जिसमें कक्षा 8 में 21 छात्रों हेतु प्रवेश फार्म आमंत्रित है।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.ई. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं – तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति के रूप में वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट–बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 21 छात्रों को प्रवेश।

नोट :– प्रवेश फार्म 1 दिसम्बर से उपलब्ध होंगे, जिन्हें आप **www.mumukshuaashram.com** से भी डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

संपर्क सूत्र :– धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203 (w), अभिनय शास्त्री 7737979912, पीयूष शास्त्री 9039290981; **E-mail : dharm1008@rediffmail.com**

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

पल में सुखी, पल में दुखी, करते तुझे संयोग जो,
पहिचान उनका रूप तू, सुखरूप हैं या दुःख कहो।
दुख में सुखों की कल्पना, यह दृष्टि ही सविकार है,
रे दृष्टि–परिवर्तन अरे, भ्रम रोग का उपचार है।।१३।।

सुख सदा सुख ही रहे, दुःख रूप हो सकता नहीं,
दुःख सदा दुःख ही रहे, सुख रूप हो सकता नहीं।
सुख खोज की यदि दुखों में, तो सुख मिलेगा ही नहीं,
दुःख भोगना ही नियति है, यदि सत्य से इंकार है।।१४।।

यूं दुखी होना सुखी होना, सब तुम्हारे हाथ में,
तुझको मिले ना सुख यदि, कुछ कमी है पुरुषार्थ में।
सच मानना बस सत्य को, इक मात्र यह पुरुषार्थ है,
मिथ्यात्व करना–कराना, दृग–ज्ञान ही परमार्थ है।।१५।।

संसार में दौड़ा किया मैं, शांति–सुख की खोज में,
करता रहा विस्तार भव का, हर घड़ी हर रोज में।
क्यों न माने दौड़ यह, सुख शांति के विपरीत है,
भगदड़ तुम्हारी हार है, विश्राम में ही जीत है।।१६।।

सुखमयी है निज आतमा, सुखदाई ही इसकी शरण,
जीवन है इसमें लीनता, इससे विमुखता है मरण।
तल्लीनता ही मुक्ति है, विस्मरण ही संसार है,
बन जाये तू मुक्ति पथिक, यह तथ्य यदि स्वीकार है।।१७।।

धन कमाने भोगने के, उपक्रमों में लीन तू,
निन्यानवे के फेर में, भिक्षुक बना है दीन तू।
विस्तार वैभव का नहीं, संसार का विस्तार है,
संसार का बढना अरे, मुझको नहीं स्वीकार है।। १८।।

संसार में डरता अरे, अन्याय से अतिचार से,
नित रत रहे संघर्ष में, अन्याय के प्रतिकार में।
स्वीकारता क्यों अब नहीं, अन्याय ही संसार है,
अन्यायमय संसार यह, अब ना मुझे स्वीकार है।।१९।।

पुरुषार्थ मैंने जो किये, भव–भ्रमण के पुरुषार्थ थे,
संसार के पुरुषार्थ सारे, परमाद हैं परमार्थ से।
निज भाव में तल्लीनता, परमाद का परिहार है,
पुरुषार्थ का लक्षण यही, जिनधर्म का आधार है।।२०।।

दिनरात के इन उपक्रमों से, संसार ही बढता रहा,
पड़ता रहा भवकूप में, भवताप ज्वर चढता रहा।
इस ताप का उपचार तो, बस एक आत्मविचार है,
निज आत्मा को भूलना, संसार का विस्तार है।।२१।।

कन्या यदि हो षोढशी तो अधीर हो वर खोजता,
मुक्ति रमा के वरण हेतु, क्या कभी आतम में झुका।
तू ही बता संसार से या, निज आत्मा से प्यार है,
संसार की सब कामना का, फल सदा संसार है।।२२।।

संसार की उपलब्धियों को, मैं तरक्की मानता,
संसार का विस्तार यह, अर मूढता है मान्यता।
घटना अरे संसार का, यह लाभ का व्यापार है,
संसार का बढना कहो, किसको कहाँ स्वीकार है।।२३।।

यह जग पतन का धाम है, उत्थान है निज आत्म में,
आधे–अधूरे जगत जन हैं, पूर्णता परमात्म में।
जग की विभूती त्यागकर, इक आतमा स्वीकार है,
वह आतमा संसार की, हर प्रक्रिया से पार है।।२४।।

(क्रमशः)

विद्यानिकेतन के कार्यालय का उद्घाटन

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री वासुपूज्य पंचायती दिगम्बर जैन मंदिर सोडा का कुंआ स्थित आत्मायतन परिसर के नवनिर्मित छात्रावास में दिनांक 6 जनवरी को श्री सम्मेदशिखर मंडल विधानपूर्वक कार्यालय का उद्घाटन किया गया।

ध्वजारोहण सभाध्यक्ष पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार ने किया। मुख्य अतिथि श्री विजयजी (जनता मशीनरी), मुख्य वक्ता पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर (जीवन शिल्प), मार्गदर्शक श्री आर.डी. जैन (पूर्व महाधिवक्ता) व पण्डित महेशजी ग्वालियर थे।

कार्यालय का उद्घाटन श्री महेन्द्रजी जैन (जैन स्टोन), कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन श्री महेश चंदजी जनकगंज, श्री महेन्द्रजी जैन (अरिहंत पेठा), मंदिर कार्यालय का उद्घाटन श्री सुशीलजी जैन ग्वालियर ने किया। कार्यक्रम का संचालन निर्देशक शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने किया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अमितजी शास्त्री व पण्डित मयंकजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शास्त्री देवलाली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित गुलाबजी बोरालकर एलोरा, पण्डित ज्ञानेन्द्रजी जैन कानपुर, विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित समकितजी जैन भोपाल एवं संचालन पण्डित शालीनजी जैन मुम्बई ने किया। दोपहर में चतुर्थ सत्र '**द्रव्य-गुण-पर्याय के अन्यथा स्वरूप का निराकरण**' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर उपस्थित थे। गोष्ठी में पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संयमजी शास्त्री भोपाल ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित शालीनजी जैन मुम्बई ने किया।

दिनांक 3 फरवरी को प्रात:काल पंचम सत्र '**मुक्ति का प्रथम सोपान सम्यग्दर्शन का वास्तविक स्वरूप**' विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित ऋषभजी जैन दिल्ली, डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री कुम्भोज बाहुबली, डॉ. स्वर्णलता जैन नागपुर, डॉ. सुजाता ताई रोटे कुम्भोज बाहुबली, विदुषी श्रुति जैन दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण विदुषी ईर्याजी जैन दिल्ली एवं संचालन पण्डित अनुभवजी जैन करेली ने किया।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

सातवाँ वार्षिक महोत्सव
एवं महामस्तकाभिषेक

दिनांक 22 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सातवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित हो रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसी अवसर पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का विदाई एवं दीक्षांत समारोह भी आयोजित किया जायेगा।

साथ ही दिनांक 24 फरवरी को जिनेन्द्र रथयात्रा एवं महामस्तकाभिषेक आयोजित होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com